संस्मरण साहित्य का स्वरूप: निर्मला जैन कृत 'दिल्ली शहर दर शहर' के परिप्रेक्ष्य में

-शशि कुमारी

शोध सार: सन 1932 में दिल्ली के व्यापारी परिवार में जन्मी निर्मला जैन हिंदी जगत की प्रख्यात आलोचक, अनुवादक एवं संपादक रही हैं। उनके द्वारा रचित संस्मरण 'दिल्ली शहर दर शहर' 20वीं सदी की दिल्ली के बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य का एक जीवंत दस्तावेज़ है। यह मात्र किसी शहर का वर्णन नहीं, बल्कि एक दिल्ली वाले की आंखों से शहर के विकास-क्रम,उसकी रूह और उसमें हुए बदलावों को समझने की कोशिश है। निर्मला जैन की यह किताब 40 के दशक से सदी के लगभग अंत तक की दिल्ली का देखा और जिया हुआ लेखा-जोखा है। इसमें साहित्य और शिक्षा के मोर्चे पर आज़ादी के बाद खड़ा होता हुआ देश भी है और वे तमाम राजनीतिक और सामाजिक प्रक्रियाएं भी हैं जिन्हें हमारे भविष्य का श्रेय दिया जाना है।

बीज शब्द: संस्मरण, स्वतंत्रता, संस्कृति, विश्वसनीयता, अंतरंग संबंध, भाषा-शैली ऐतिहासिकता, विभाजन, वैयक्तिकता, राजनीति

मूल आलेख: संस्मरण आधुनिक युग में विकसित हुई महत्वपूर्ण गद्य विधाओं में से एक है। इसमें जीवन के किसी भी महत्वपूर्ण भाग या घटना का संदर्भ होता है।जीवनी किसी दूसरे द्वारा लिखी जाती है,आत्मकथा स्वयं लिखी जाती है, परंतु संस्मरण कोई भी लिख सकता है। "संस्मरण शब्द सम उपसर्ग तथा स्मरण शब्द के योग से बना है जिसका तात्पर्य है सम्यक स्मरण।"**1** शब्दकोश में संस्मरण के- संस्मरण, खूब याद करना, अच्छी तरह सुमरना या नाम लेना संस्कार जन्य ज्ञान आदि अर्थ निकलते हैं। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए अनेक प्रकार की अनुभूतियां उसमें विद्यमान रहती हैं। विभिन्न कलाओं के माध्यम से वह इन अनुभूतियों को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। संस्मरण विधा भी व्यक्ति की संचित अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का लिखित माध्यम है। डॉ. अमरकांत के शब्दों में- "संस्मरण हिंदी गद्य की एक नवीन किंतु महत्वपूर्ण विधा है। संस्मरण का मूल अर्थ है सम्यक स्मृति।एक ऐसी स्मृति जो वर्तमान को अधिक सार्थक, समृद्ध और संवेदनशील

बनाती है। संस्मरण मूलतः अतीत एवं वर्तमान के बीच एक सेतु है। समय सरिता के दो तत्वों के बीच संवाद का माध्यम है संस्मरण।"2

हिंदी साहित्य में संस्मरण लेखन का प्रारंभ 20वीं शताब्दी के तीसरे दशक में आरंभ हो चुका था, परंतु विधा के रूप में संस्मरण की स्वतंत्र पहचान पाँचवी सदी में बनी। संस्मरण के मूल तत्वों में स्मृति, संबंधभाव आत्मानुभव, वैयक्तिकता, सत्य घटना, देशकाल (भूतकाल तथा वातावरण) भाषा-शैली जैसे तत्व सम्मिलित हैं। हिंदी के पहले संस्मरणकारो में पद्मसिंह शर्मा का नाम आता है । इनका पहला संस्मरण 'पद्म पराग' 1929 में प्रकाशित हुआ, जिसमें सत्यनारायण कविरत्न, भीमसेन शर्मा आदि पर मार्मिक संस्मरण हैं। इसके पश्चात संस्मरण लेखन की परंपरा निरंतर चलती रही। इस परंपरा को समृद्ध बनाने में महादेवी वर्मा, सेठ गोविंद दास, विनोद शंकर व्यास, राहुल सांकृत्यायन, उपेंद्रनाथ अश्क, नागार्जुन, विष्णु प्रभाकर, रामधारी सिंह दिनकर, नगेंद्र आदि लेखकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संस्मरण लेखन की परंपरा में निर्मला जैन कृत 'दिल्ली शहर दर शहर एक उल्लेखनीय संस्मरण है। इस संस्मरण में 15 संस्मरण संकलित हैं। प्रत्येक संस्मरण में लेखिका का वैयक्तिक अनुभव, यथार्थवादिता, तटस्थता आत्मीयता और विश्वसनीयता जैसे गुण देखने को मिलते हैं। यह संस्मरण स्वतंत्रता से पूर्व दिल्ली और स्वतंत्रता के पश्चात् की दिल्ली का आंखों देखा हाल व्यक्त करता है। निर्मला जैन के शब्दों में-"व्यक्ति जिस शहर में जन्म लेता है, बड़ा होता है बनता बिगड़ता है, वह अनजाने ही उसके व्यक्तित्व और संस्कार का हिस्सा हो जाता है। उसके भीतर रस-बस जाता है। अपने से बाहर अलग खड़े होकर खुद को देखने-परखने पर यह एहसास लगातार होता रहता है। यह रचना भीतर बसे ऐसे ही शहर दिल्ली की कुछ यादों को पुनर्जीवित करने के मोह की परिणति है।"3

ऐतिहासिकता संस्मरण का एक गुण है। निर्मल जैन का यह संस्मरण ऐतिहासिक घटनाओं का एक जीता जागता दस्तावेज है। दिल्ली शहर का इतिहास अत्यंत दीर्घ है। इस दीर्घकालीन इतिहास के भीतर दिल्ली कितनी बार उजड़ी और कितनी बार बसी इसका जीवंत उल्लेख इस संस्मरण में मिलता है। राजनीतिक स्थितियां, विभाजन की अमानवीय

त्रासदी एवं समय की विकरालता ने दिल्ली शहर को नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली दो भागों में विभाजित कर दिया। इस संदर्भ में निर्मल जैन लिखती हैं कि – "आज की दिल्ली के भौगोलिक विस्तार के बावजूद उस ठहरी हुई दुनिया, 'दिल्लीवालों' की दिल्ली का तसव्वुर अब भी उस पीढ़ी के ज़हन में मौजूद है जो आजादी से पहले शहर के गली-कुचों में आबाद थी।"4 यह मात्र एक शहर नहीं अपितु विभिन्न संस्कृतियों का संगम है। यहाँ स्मृति के रूप में कोई व्यक्ति नहीं अपितु एक शहर, दिल्ली है जिसके भीतर न जाने कितने छोटे-छोटे शहर, कितनी संवेदनाएं और कितने रूप जीते हैं। स्वतंत्रता पूर्व की दिल्ली की संस्कृति को व्यक्त करती संस्मरण की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं-"यह मात्र संयोग नहीं है कि चांदनी चौक की लाल किले से फतेहपुरी तक लगभग एक मील लंबी सीधी सड़क पर क्रमशः एक जैन मंदिर एक गौरीशंकर मंदिर एक चर्च एक गुरुद्वारा और आखिरी सिरे पर एक मस्जिद।"5 मंदिर मस्जिद और गुरुद्वारे का एक स्थान पर होना दिल्ली की सांस्कृतिक एकता को व्यक्त करता था। इस शहर का खानपान वहाँ की विरासत था। समय के साथ-साथ अनेक लोगों ने विभाजन के कारण दिल्ली में शरण पाई, जिस कारण उन लोगों का खान-पान भी दिल्ली की संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। "दरअसल खानपान की संस्कृति का गहरा संबंध हर समुदाय के इतिहास और भूगोल से होता है। लंबी अनुभविक प्रक्रिया से गुज़रकर मनुष्य अपने खान-पान की रिवायतें विकसित करता है जो उसके संस्कार का हिस्सा बन जाती हैं।"6

पंजाब और पाकिस्तान से आए शरणार्थियों ने इसी शहर में अपना शेष जीवन व्यतीत किया। अंग्रेजों की कई नीतियों ने जहाँ सांप्रदायिक दंगों को हवा दी, वहीं शहर को अपनी उपयोगिता का केंद्र भी घोषित कर दिया। "दिल्ली: स्वाधीनता आंदोलन के दौर में" संस्मरण में लेखिका ने दिल्ली में व्याप्त ब्रिटिश शासन की दोगली मानसिकता पर प्रहार किया है- "ऊपरी नेमतों के छलावे और आधुनिकता के मुखौटे के भीतर शोषण और लूट की जो प्रक्रिया चल रही थी उससे बेखबरी विद्रोह की घटना के बाद नहीं हुई। इसी एहसास ने आगे चलकर स्वाधीनता आंदोलन का रूप ग्रहण किया।"7 अंग्रेजी शासन के दौर में भारतीय शिक्षा प्रणाली के वर्णन में भी लेखिका ने **तटस्थता** का परिचय दिया है और

घटनाओं के प्रस्तुतीकरण में **विश्वसनीयता** भी है। दिल्ली में शिक्षा संस्थानों का वास्तविक रूप ब्रिटिश शासन के दौर में ही सामने आया- "शिक्षा की दृष्टि से 1931 से 47 के बीच का समय दिल्ली के इतिहास का महत्वपूर्ण दौर था। एक ओर शासको ने मिशनरी उत्साह से इस दिशा में कदम उठाया तो दूसरी ओर स्वत्-बोध की प्रेरणा से मदरसा, गाजीउद्दीन खां, महावीर जैन हाई स्कूल, इंद्रप्रस्थ हाई स्कूल हिंदू कॉलेज जैसी शिक्षा संस्थानों की शुरुआत हुई।"8

संस्मरण में संस्मरणकार भूतकाल में घटित तमाम घटनाओं को बड़े ही सूक्ष्म ढंग से प्रस्तुत करता है। इन घटनाओं के साथ-साथ वह अपने निजी जीवन को भी इसमें चित्रित करता है, जिससे उसके **व्यक्तित्व का चित्रांकन** होता है। अपनी शिक्षा के संबंध में भी लेखिका ने संस्मरण में उल्लेख किया है-"कुल मिलाकर माहौल में अंग्रेज़ी का दबदबा था। उसी से प्रेरित होकर घर के दो बच्चों का दाखिला प्रेजेंटेशन कॉन्वेंट में कराया गया। बहुत जल्दी बच्चों में काले गोरे के भेदभाव से प्रेरित एक घटना को लेकर पिताश्री का स्कूल के प्रिंसिपल से झगड़ा हुआ और हिंदुस्तानी में खरी-खोटी सुना कर वे हमें स्कूल छुड़ाकर घर ले आए।"9

इस प्रकार की तमाम घटनाओं के परिणामस्वरुप देशवासियों में स्वतंत्रता की लहर दौड़ी।कई राजनेता और लेखक देश प्रेम की भावनाओं को लेकर आगे आए। भारत देश की स्वतंत्रता के साथ-साथ दिल्ली शहर भी आज़ाद हुआ। यह शहर अब वह शहर नहीं रह गया था, जो आजादी के पूर्व था। आजादी के पहले जो सपने देखे थे आजादी के पश्चात वह निरर्थक सिद्ध हुए। छुआ-छूत, आपसी दंगे एवं फसाद दिल्ली के प्रत्येक गली में देखे जा सकते थे। यह सारी स्थिति इस बात का प्रमाण थी कि अंग्रेजी शासन की तो समाप्ति हो गई परंतु उस शासन ने जो कटरता और तबाही के बीच बोए थे, अब वे अंकुरित हो रहे थे-"जब विभाजन के संदर्भ में दंगों का कहर बरपा हुआ तो वे (मां) बेहद चौकस हो गईं। आँख कान खोल, हर समय जामा मस्जिद की तरफ से किसी और अप्रत्याशित हमले की आशंका से ग्रस्त।"10 एक ओर जहाँ देश आज़ाद हुआ वहीं दूसरी ओर विभाजन की क्रांति में देश को झकझोर कर रख दिया। स्वतंत्रता के दौर की दहशत का स्मरण कर लेखिका भयभीत हो

जाती है। आतंक, दहशत से उपजे उस भय का शिकार लगभग प्रत्येक व्यक्ति था। संस्मरण में विभाजन के समय में लोगों ने जो झेला, कैसे उनसे उनका मुल्क छिन गया और दूसरे स्थान पर शरणार्थियों की तरह पनाह पाकर रहने में उन्हें जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा उन सारी घटनाओं के वृत्तांत को बड़ी सजीवता के साथ संस्मरण में उभार गया है। जब शरणार्थियों ने दिल्ली में पनाह पाई तो धीरे-धीरे संपूर्ण दिल्ली पर उनका कब्जा हो गया। दिल्ली दो भागों में विभाजित हो गई- नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली। दिल्ली में दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना और उस विश्वविद्यालय में हिंदी विषय को स्थान दिलाने में डॉक्टर नगेंद्र, डॉक्टर विजेंद्र स्नातक और डॉक्टर उदयभानु सिंह की भूमिकाओं का जिक्र भी निर्मला जैन ने इस संस्मरण में किया है-"भाषा और साहित्य की दृष्टि से दिल्ली में हिंदी के परिदृश्य को भरा पूरा बनाने में डॉक्टर नगेंद्र का ऐतिहासिक योगदान था इससे इनकार नहीं किया जा सकता।"11

निर्मल जैन और दिल्ली शहर का **अंतरंग संबंध** काफी गहरा नज़र आता है। दिल्ली शहर के बदलते स्वरूप के प्रति वे चिंतित दिखाई देती हैं। स्वतंत्रता के पश्चात दिल्ली में शरणार्थियों का आगमन और जनसंख्या में विस्फोट, सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन, शहरी परिदृश्य में परिवर्तन और आरंभिक चुनौतियों के रूप में शरणार्थियों के लिए आवास, रोजगार और भोजन की व्यवस्था जैसी चुनौतियां सामने आईं। इसके साथ ही धीरे-धीरे दिल्ली शहर राजनीतिक उठा-पटक, विरोधों और प्रदर्शनों का गढ़ बनता जा रहा था। जहाँ तक दिल्ली की स्थानीय संस्थाओं का सवाल था, वे सब धीरे-धीरे पूरी तरह सरकारी गिरफ्त और भ्रष्टाचार की लपेट में आती चली गईं। इसमें लेखिका यह भी बताती है कि आज की नई दिल्ली की सत्ता पूरे देश को नियंत्रित करती है, लेकिन इस प्रक्रिया में पुरानी दिल्ली के साथ जो विस्थापन और बदलाव हुआ वह महत्वपूर्ण है-"दिल्ली शहर की बनावट और संस्कृति पर आर्थिक उदारीकरण की नीतियों का प्रभाव अलक्षित ढंग से, पर गहराई तक पड़ रहा था। देखते-देखते शहर का बेहतरीन विस्तार होता जा रहा था। शहर का केंद्र क्रमशः पुराने शहरी इलाकों से खिसक कर नई दिल्ली हो गया था।"12

इस शहर की समस्याओं का पूरी तरह समाधान आज तक नहीं हो पाया है। पहले के समय में खासकर 20वीं सदी के आरंभ में बड़ी हवेलियों में घोड़े, टांगे और गाय-भैंस रखने की व्यवस्था थी। घरों में ही पशुओं को रखा जाता था ताकि ताज़ा दूध और घी मिल सके। संयुक्त परिवार होने के कारण यह व्यवस्था बड़ी आसानी के साथ चलती थी। पशुओं की देखभाल के लिए गवाले होते थे, जो सुबह उन्हें चराने ले जाते और शाम को वापिस ले आते। यह व्यवस्था उस समय के सामाजिक और पारिवारिक जीवन का हिस्सा थी। धीरे-धीरे समय बदला। संयुक्त परिवार टूटने लगे और आर्थिक व व्यावहारिक समस्याओं के कारण घरों में पशु रखना मुश्किल हो गया। घरों के तबेले गैरेज में तब्दील हो गए और उनकी जगह मोटर गाड़ियों ने ले ली। इसके बाद कुछ लोगों ने छोटे स्तर पर डेयरी का काम किया। शहर में छोटी डेयरियां बनने लगीं। इन डेरियों के पशु बाद में खाने की तलाश में बाजारों और सड़कों पर नजर आने लगे जिससे नई समस्याएं पैदा होने लगी। नगर निगम ने इस समस्या को नियंत्रित करने के लिए कई कदम उठाए लेकिन पूरी सफलता नहीं मिल पाई। इसका एक कारण यह भी है कि आज भी लोग डेयरी की अपेक्षा शुद्ध दूध और दहीं पर विश्वास रखते हैं।

"धीरे धीरे परिवार टूटे, वित्तीय और व्यावहारिक कठिनाइयों के कारण पशुपालन संभव हो गया। हवेलियों के तबेले गराजों में तब्दील हो गए। उनमें मोटरगाड़ियां आ गई और साईसों की जगह ड्राइवरों ने ले ली। पशु चारण की जिम्मेदारी जिन पर थी, उन्होंने जहाँ जगह मिली, दो चार गाय-भैंस खूंटे से बांधकर खुद दूध का व्यापार शुरू कर दिया। इस तरह शहर में छोटी बड़ी उन तमाम डेयरियों की नींव पड़ी जिनके पशु बाद में छिलकों से लेकर प्लास्टिक की थैलियां तक खाते और खाने की तलाश में गली बाज़ारों में भटकने लगे"13

20वीं सदी के अंत तक आते-आते दिल्ली ने बहुत कुछ खोया पर समय रहते बहुत कुछ पा भी लिया। यह शहर अधिकतर कई प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त रहा पर इन समस्याओं को इस शहर ने अपने पर हावी नहीं होने दिया। इस शहर में मौजूद हर दुकान का अपना इतिहास और जजमानी है। दिल्ली की सांस्कृतिक बनावट का छोटा-मोटा आईना है यह दुकानें-"यह ऐसे छोटे-छोटे द्वीप हैं जिन्होंने आज भी दिल्ली वालों की पुरानी संस्कृति की

छत को बनाए रखा है, वरना सदी के अंत तक आते-आते भूमंडलीकृत बाजारवादी संस्कृति के अंधड़ में एक बार तो दिल्ली वालों के जैसे तंबू ही उखड़ गए।"14

संस्मरण एक **लचीली विधा** होती है यानी इसमें दूसरे प्रकार की लेखन शैलियों को भी शामिल किया जा सकता है। इसी वजह से कई बार लोग संस्करण को रेखाचित्र, आत्मकथा या रिपोर्ताज जैसी दूसरी विधा समझने की गलती कर देते हैं। इसमें आत्मकथा, कहानी, रेखाचित्र आदि के कुछ तत्व मिलते हैं, इसलिए इसमें अलग-अलग शैलियों का मिश्रण दिखना सामान्य बात है। निर्मल जैन के संस्मरण की भाषा-शैली सरल, सहज और आत्मीय है। इसमें वर्णनात्मकता के साथ-साथ कथात्मकता भी मिलती है जिससे पाठक को ऐसा लगता है जैसे वह स्वयं दिल्ली के बदलते रूप को देख रहा हो। संस्मरण के आरंभ में ही चित्रात्मक भाषा का प्रयोग देखा जा सकता है-"पहले बात उस दिल्ली की करें जो दिल्ली वालों की दिल्ली थी। चाँदनी चौक को धुरी माने तो लाल किले से नाक की सेद में फतेहपुरी तक जाने वाली उस चोड़ी सड़क के दोनों तरफ थोड़ी-थोड़ी दूर पर कुछ अपेक्षाकृत छोटा बाज़ार सड़कें या कटरे कटते हैं। इनकी खूबी यह है कि यह कहीं खत्म नहीं होते। भीतर ही भीतर कहीं तंग कहीं चोड़ी होती इन गलियों में रिहाइशी और व्यापारी-पूरी दुनिया बसी है।"15 भाषा में स्पष्टता, भावात्मकता और यथार्थ का संतुलन है, जो पूरे संस्मरण को रोचक और प्रभावशाली बनाता है।

अंतत: यह कहा जा सकता है कि निर्मला जैन का यह संस्मरण आज के संदर्भों में कई अर्थों में प्रासंगिक है। संस्मरण विधा को आगे ले जाने में निर्मला जैन की भूमिका प्रशंसनीय है। दिल्ली शहर की ऐतिहासिकता को जिस सूक्ष्मता के साथ इस संस्मरण में उभारा गया है, इतना सूक्ष्म विवरण अन्यत्र मिलना कठिन है। वैयक्तिकता संस्मरणकार (निर्मल जैन) और समृत व्यक्ति (दिल्ली) के मध्य अंतरंग संबंध, विश्वसनीयता तथा ऐतिहासिक घटनाओं का यथार्थ प्रस्तुतीकरण आदि इस संस्मरण की मुख्य प्रवृत्तियां हैं। इसमें दिल्ली का विकास एक दोधारी तलवार की तरह है। एक ओर आधुनिक सुविधाएं और प्रगति है,तो दूसरी ओर मानवीय रिश्तों का क्षय, सांस्कृतिक पतन और बढ़ती संवेदनहीनता भी है। इस संस्मरण के माध्यम से लेखिका यह संकेत देती है कि हमें विकास के साथ-साथ मानवीय मूल्यों और

सांस्कृतिक विरासत को भी संजोकर रखना चाहिए। केवल भौतिक उन्नति ही वास्तविक प्रगति नहीं है, बल्कि समाज में अपनापन और संवेदनशीलता भी उतनी ही आवश्यक है। यह एक ऐसा संस्मरण है जो दिल्ली के बहाने पूरे समाज के परिवर्तन को दर्शाता है। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि हम क्या पा रहे हैं और क्या खो रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. देसाई, बाबूराम, संस्मरण साहित्य विधा: शास्त्र और इतिहास (कानपुर: प्रयाग प्रकाशन, 2018), पृष्ठ-15

2. अमरकांत, हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली (नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन 2025), पृष्ठ-350

3. जैन, निर्मला, दिल्ली शहर दर शहर (नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2016),पृष्ठ-15

4. वहीं, पृष्ठ-5

5. वहीं, पृष्ठ-19

6. वहीं, पृष्ठ-5

7. वहीं, पृष्ठ-39

8. वहीं, पृष्ठ-54

9. वहीं, पृष्ठ-58

10. वहीं, पृष्ठ-59

11. वहीं, पृष्ठ-71

12. वहीं, पृष्ठ-96

13. वहीं, पृष्ठ-167

14. वहीं, पृष्ठ-185

15. वहीं, पृष्ठ-18

शशि कुमारी

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर, पंजाब

मोबाइल नंबर:9797634518

ईमेल: shashikumari1051997@gmail.com